योग और विज्ञान

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

आज लोग विज्ञान के चमत्कारों से बहुत प्रभावित हैं। विज्ञान की विभिन्न शाखाओं ने पिछले लगभग डेढ़ सौ वर्षों में वह अभूतपूर्व प्रगति की है जो पिछले लगभग दो हज़ार वर्षों में भी नहीं हुई। विज्ञान के इस तीव्र वेगी विकास ने मनुष्य को भौतिक सुख-सुविधा के अनगिनत साधन दिये हैं। यदि इन सब सुखों की एक लम्बी सूची तैयार की जाए और उन सुखों को कुछ शीर्षकों के अंतर्गत लिखा जाए तो मुख्य रूप से वे शीर्षक ये होंगे - 1. स्वास्थ्य और स्वच्छता में वृद्धि करने अथवा रोगों की चिकित्सा और आयुष्य में वृद्धि करने सम्बन्धी 2. यातायात और कार्य को शीघ्र तथा सुविधा पूर्वक सम्पन्न करने सम्बन्धी 3. उत्पादन में वृद्धि करने, वस्तुओं की जिन्स अथवा क्वालिटी को ऊँचा बनाने तथा उनमें परिवर्तन लाने सम्बन्धी 4. मनुष्य को मनोरंजन, सज-धज, बनाव-श्रृंगार, रूप-सौंदर्य तथा क्षण-भंगुर खुशी देने सम्बन्धी 5. सूचना-प्रसार, प्रचार, समाचार के लेन-देन तथा विचारों के आदान-प्रदान और प्रकाशन सम्बन्धी 6. आविष्कार, खोज, अनुसंधान तथा जानकारी को आगे बढ़ाने सम्बन्धी।

विज्ञान मनुष्य को सृष्टि के जिन रहस्यों का बोध कराता है और समाचार प्राप्त करने तथा प्रसारित करने के जो यन्त्र अथवा साधन प्रदान करता है, उससे कहीं अधिक ज्ञान (मनुष्य-सम्बन्धी तथा सृष्टि सम्बन्धी लाभप्रद जानकारी) योग रूपी विज्ञान द्वारा मनुष्य को प्राप्त होती है।

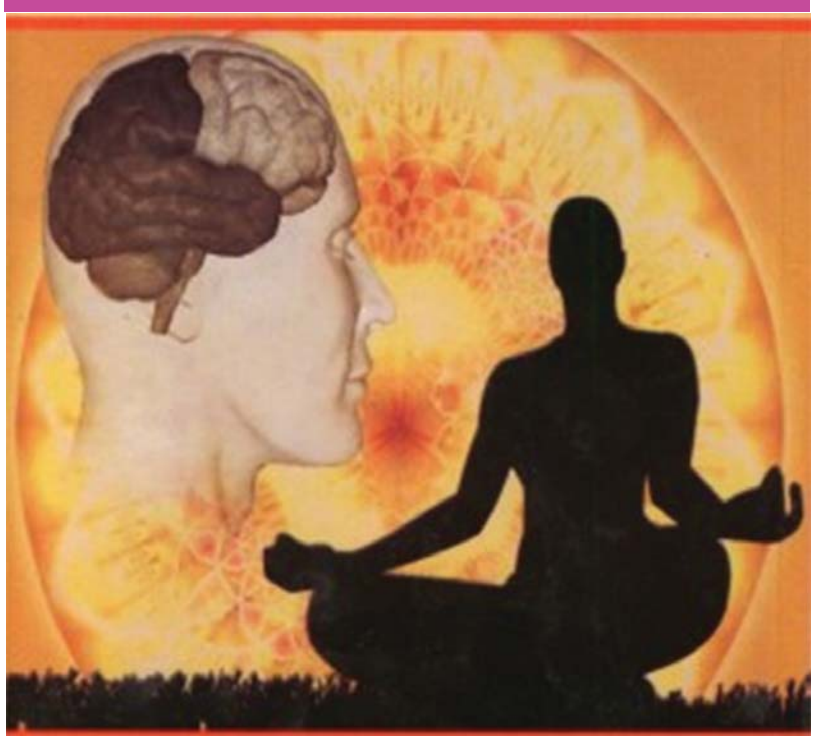

इन सभी आविष्कारों के फलस्वरूप का संसार

विज्ञान ने उपरोक्त छः मुख्य शीर्षकों के लिए जो सामग्री जुटाई है, उसके पीछे करोड़ों मनुष्यों का, कई जीवनों का पुरुषार्थ है और उस पर इतना धन तथा समय लगा है कि जिसका कोई हिसाब नहीं है। परंतु उसके बावजूद भी हम देखते हैं कि संसार की हालत कोई ज़्यादा सुधरी नहीं है, मनुष्य के व्यवहार में तो बिल्कुल परिवर्तन नहीं हुआ है बल्कि पतन ही हुआ है और नये-नये प्रकार के रोग, कष्ट, दुःख अथवा अशांति के कारण हमारे सामने आये हैं। लोगों के जीवन में कृत्रिमता आई है, अनाचार और अत्याचार में भी वृद्धि ही हुई है, मनुष्य का स्वभाव अधिक कुटिल तथा दानवी बना है और संसार में वैमनस्य, दरिद्रता, बेरोज़गारी, दुःख आदि की कमी नहीं हुई।

एक अन्य अद्भुत विज्ञान और उसके फल

परन्तु एक विज्ञान ऐसा भी है जिसके द्वारा सुख प्राप्त करने के लिए एक फूटी कौड़ी भी खर्च नहीं करनी पड़ती। उसके लिए सैकड़ों वर्ष पुरुषार्थ करने की भी ज़रूरत नहीं। वह विज्ञान अकेला ही उपरोक्त छहों प्रकार के सुख प्राप्त करने के योग्य हमें बना देता है। उस विज्ञान द्वारा सृष्टि की रूप-रेखा, आचार परम्परा, व्यवहार-विचार, सब-कुछ बदल जाता है। तब यहाँ कोई भी दुःखदायक व्यक्ति नहीं रहता, न कोई कष्टकारक रीति-नीति ही रहती है। उस विज्ञान का नाम 'योग' है। उस विज्ञान द्वारा मनुष्य को निरोगी काया मिलती है और वह अमर देव पद को प्राप्त कर लेता है। उसे यातायात के लिए पुष्पक आदि विमान मिलते हैं और उस विज्ञान के द्वारा स्थापित हुए लोक में अथवा उस द्वारा लाये गए नये युग में सब वस्तुओं की उत्पत्ति इतनी मात्रा में होती है और उनकी जिन्स (जाति) इतनी उत्तम होती है कि मनुष्य को किसी पदार्थ की कमी नहीं रहती और उस लोक को 'सुखधाम' अथवा 'स्वर्ग' कहा जाता है। उस द्वारा मनुष्य को कुदरती तौर पर पूर्ण सौंदर्य प्राप्त होता है और मनोरंजन के अनगिनत एवं दिव्य साधन उपलब्ध होते हैं। कहने का भाव यह है कि विज्ञान द्वारा प्राप्त होने वाले उपरोक्त छहों प्रकार का विकास योग रूप विज्ञान द्वारा अति सहज, दिव्य, सम्पूर्ण रूप में प्राप्त होता है।

योग द्वारा उत्कृष्ट ज्ञान की प्राप्ति

पुनश्च, विज्ञान मनुष्य को सृष्टि के जिन रहस्यों का बोध कराता है और समाचार प्राप्त करने तथा प्रसारित करने के जो यन्त्र अथवा साधन प्रदान करता है, उससे कहीं अधिक ज्ञान (मनुष्य-सम्बन्धी तथा सृष्टि सम्बन्धी लाभप्रद जानकारी) योग रूपी विज्ञान द्वारा मनुष्य को प्राप्त होती है। योग मनुष्य को सूर्य और तारागण के पार के लोकों का भी सहज ही ज्ञान कराता है तथा संसार या समाज के आगे आने वाली परिस्थितियों का भी अग्रिम साक्षात्कार कराता है। वैज्ञानिक आकाश में उपग्रह अथवा सेटेलाईट स्थापित करके उन द्वारा सूचना-प्रसार करते तथा आने वाली परिस्थितियों को पहले से जानने के योग्य होते हैं, परंतु योगी त्रिकालदर्शी एवं त्रैलोकज्ञ परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित करके सब-कुछ जान लेते हैं। वैज्ञानिक तीव्र-वेगी रॉकेटों द्वारा जहाँ पहुँच पाते हैं, योगी दिव्य प्रज्ञा अथवा ऋतम्भरा बुद्धि द्वारा वहाँ सहज ही पहुँच जाते हैं। वैज्ञानिकों के पास टेलिविज़न, टेलिस्कोप, वायरलेस इत्यादि साधन हैं, योगी के पास दिव्य दृष्टि इससे बहुत उत्तम और सूक्ष्म रूप से कार्य करती है।

पुनश्च, हम देखते हैं कि विज्ञान के जो बहुत ही महत्वपूर्ण, अद्भुत एवं लाभकारी आविष्कार हैं, उनमें 1. भट्ठी,(Furnace) 2. इलेक्ट्रो मैग्नेटिक सिस्टम (विद्युत-चुम्बकीय साधन, Electro magnetic system) और उस द्वारा 3. रिमोट कंट्रोल तथा 4. परमाणु और उससे भी सूक्ष्म विद्युत-कणों का तथा शक्ति के अन्यान्य रूपों (ध्वनि, चुम्बकीय शक्ति इत्यादि) का ज्ञान या तत्सम्बन्धी आविष्कार शामिल हैं। ठीक इसी प्रकार का अध्ययन-क्षेत्र अथवा अनुभव-क्षेत्र योग रूपी विज्ञान का भी है। योग रूपी विज्ञान परमाणु से भी अधिक सूक्ष्म जो 'आत्मा' है उसका अनुभव एवं बोध कराता है। यह विज्ञान परमात्मिक शक्ति उपलब्ध कराता है, परमात्मा, जो कि प्रकाश (Light) और शक्ति (Might) का पुंज है, उसकी अनुभूति कराता है। जैसे शरीर-विज्ञान शरीर रचना (Anatomy of the body) का परिचय देता है वैसे ही योग-विज्ञान मन-बुद्धि-संस्कार रूप आत्मिक योग्यताओं का ज्ञान कराता है।

पटियाला-पंजाब। बी.जे.पी. के वरिष्ठ नेताओं की बैठक में मेनका गांधी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राखी। साथ हैं डॉ महेश शर्मा, भगवान दास जुनेजा, ब्र.कु. जगदेव व अन्य।

अबोहर-पंजाब। पंजाब केसरी समाचार पत्र समूह के प्रधान संपादक पद्मश्री विजय चोपड़ा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. पुष्पलता। साथ हैं ब्र.कु. दर्शना, ब्र.कु. सुनीता, समाचार पत्र समूह के क्षेत्रीय प्रतिनिधि कांति भारद्वाज, सोसायटी ऑफ मीडिया ईनीशिएटिव फॉर वैल्यूज़ के प्रांतीय सह संयोजक राज सदोष व अन्य गणमान्य जन।

दिल्ली। मदर्स प्राईड एंड प्रेसेडियम स्कूल के बीस साल पूरे होने व 100 स्कूल्स खोले जाने के शुभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. उर्मिल व ब्र.कु. वीरेन्द्र,गुड़गांव, श्रीमती सुधा गुप्ता व देवेन्द्र गुप्ता,चेयरपर्सन एंड मैनेजिंग डायरेक्टर,मदर्स प्राईड ग्रुप ऑफ स्कूल्स तथा अन्य।

जयपुर-वैशाली नगर। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अंतर्गत 'अलविदा डायबिटीज़, राजयोग मेडिटेशन द्वारा प्रशिक्षण एवं नियंत्रण शिविर' में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. श्रीमंत साहू,डायबिटीज़ विशेषज्ञ, ग्लोबल अस्पताल,माउण्ट आबू।

झालावाड़-राज.। तम्बाकू निषेध दिवस पर बस स्टैंड परिसर में 'नशा मुक्ति प्रदर्शनी' का उद्घाटन करते हुए जिला रोडवेज़ अधिकारी अब्दुल कलाम, ब्र.कु. ओमप्रकाश व अन्य भाई बहनें।

अरेराज-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा तम्बाकू निषेध दिवस पर पर नशा मुक्ति-तनाव मुक्ति यात्रा का शुभारंभ करने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. सीता, ब्र.कु. रिंकी एवं अन्य भाई बहनें।